Std. VIII HINDI LIT(कौरव नगरी भाग --8)

प्रश्न उत्तर :---

प्रश्न 1. गांधारी क्यों कहती हैं 'मत दोहराए ,मैं सह नहीं पाऊँगी?

उत्तर :-जब धृतराष्ट्र दु:शासन की मृत्यु का वर्णन करते हैं ,तब गांधारी उन्हें ऐसा करने से मना करती हैं क्योंकि , उसे वह सहन नहीं कर पाएँगी। गांधारी सौ पुत्रों की माँ थीं और उनके एक-एक करके सभी पुत्र युद्ध भूमि में मारे जा रहे थे। माँ के लिए ममता ही सर्वोपरि होती है। माँ अपने पुत्र की सलामती के सिवा कुछ नहीं चाहती ।उन्होंने स्वेच्छा से अपनी आँखों पर पट्टी तो बाँध ली थी, पर वह जन्मांध नहीं थीं अतः अपने पुत्रों की मृत्यु की पीड़ा को महसूस कर सकती थीं।

प्रश्न-2:- किस सत्य का धृतराष्ट्र को भान हुआ?

उत्तर:- जब सबकुछ युद्ध में ख़त्म हो गया, तब धृतराष्ट्र को समझ आया कि जो उन्होंने अपने पुत्र के भविष्य को लेकर अपने हृदय में सपने सँजो रखे थे, वो मात्र उनकी कल्पना थी। उनकी सोच से परे भी एक सच्चाई है,जिससे वे पूरी तरह अपरिचित हैं। लेकिन उनका हृदय यह बात स्वीकार करना नहीं चाहता है।

प्रश्न -3:- कोटि- कोटि योजन तक दहाड़ता हुआ समुद्र से यहाँ क्या आशय है?

उत्तर- जिस प्रकार अथाह समुद्र के अनगिनत लहरें तट पर फैली चीज़ों को स्वयं में समेटकर लुप्त हो जाती हैं, उसी तरह से कुरुक्षेत्र में कौरव दल को समुद्ररूपी पांडवों के दल ने अपनी लहरों में समेट कर रौंद डाला।